शोध मंथन Vol. XVII No.1 Jan.- Mar. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.15

# समसामयिक परिदृश्य में 'पिछवाई' कला

प्राप्तिः 07.02.26
स्वीकृतः 03.03.26

15

**रीता देवी**
शोधार्थी यूजीसी नेट (ललित कला विभाग)
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेलः*kataria.reeta01@gmail.com*

**डॉ. रीता सिंह**
असिस्टेंट प्रोफेसर, (ललित कला विभाग)
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

**सारांश**

*पिछवाई कला राजस्थान की पारंपरिक चित्रकला है। जिसका उद्धभव राजस्थान के नाथद्वारा में हुआ। पिछवाई मूलतः नाथद्वारा में श्रीनाथजी की भक्ति परंपरा से जुड़ी धार्मिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यत्मक मूल्यों की संवाहक रही है। समसामयिक परिदृश्य में पिछवाई कला मंदिरों से निकलकर कला दीर्घाओं और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी पहचान बना चुकी है। आधुनिक कलाकार पारंपरिक विषयों और शैली को बनाए रखते हुए नए माध्यमों और आधुनिक दृष्टिकोण के साथ प्रयोग कर रहे। इससे पिछवाई कला को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिल रही है।*

**मुख्य शब्द**

*नाथद्वार – भगवान का द्वार*
*समृद्ध – धनवान*
*रूपांकन – डिजाइन*
*विविधता – भिन्नता और अनेकता*
*पौराणिक – जिसका उल्लेख पुराण में हुआ हो*
*आध्यात्मिक – परमात्मा और आत्मा में संबंध रखने वाला*

पिछवाई कला राजस्थान की प्रसिद्ध पारंपरिक हस्तकलाओं में से एक है। पिछवाई कला का इतिहास वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित पुष्टिमार्ग संप्रदाय से जुड़ा हुआ है। इस संप्रदाय में श्री कृष्ण के बालस्वरूप 'श्रीनाथ जी' की पूजा की जाती है। पिछवाई कला का समृद्ध इतिहास भारत में 17वी शताब्दी से मिलता है। 1972 ईस्वी में जब मुगलबादशाह औररंगजेब की नीतियों के कारण श्रीनाथ की मूर्ति को वृन्दावन से मेवाड़ ले जाया जा रहा था, तब मेवाड़ के राजा राजसिंह ने इसे संरक्षण दिया जिस स्थान पर यह मूर्ति स्थापित की गई, वह बाद में नाथद्वारा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। माना जाता है कि श्रीनाथ जी की दिन में 8 बार पूजा होती है और 8 बार ही इनके वस्त्र बदले जाते हैं और 8 बार ही

पिछवाईयां बदली जाती हैं। श्रीनाथ जी कि मूर्ति के पीछे लगाया जाने वाला पर्दा जो हाथ से चित्रित होता है, उसे पिछवाई कहते हैं। यह एक प्रकार की चित्रकारी है। जो कपड़े पर बनायी जाती है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण के चित्र एवं उनकी कहानियाँ दर्शायी जाती हैं। पिछवाई कला का उपयोग मंदिरों में आंतरिक गर्भग्रहों पर पृष्ठभूमि के रूप में किया जाता है और इन पर्दो को प्रतिदिन बदला जाता है और उस दिन के मौसम (उष्ण, ग्रीष्म) त्यौहार और अनुष्ठानों के अनुसार डिजाईन किया जाता है।

पिछवाई चित्रों में भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे गोवर्धन पर्वत उठाना, रासलीला, गोवर्धन पूजा, गोपाष्टमी, दानलीला, माखन चोरी आदि का चित्रण किया जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से पिछवाई कला भक्तों को भगवान के निकट लाने का प्रयास करती है।

**कृष्ण और गोपी रासलीला 'पिछवाई'**

इसके धार्मिक चित्रण और दिव्य लीलाएँ भक्तों को गहरे आध्यात्मिक अनुभव की अनुभूति कराती है। पिछवाई कला धार्मिक, सांस्कृतिक और अध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है और राजस्थान की समृद्ध विरासत का प्रतीक है। कमल का फूल, मोर और गाय जैसे प्रतीक धार्मिक और सांस्कृतिक अर्थ रखते हैं, जो भक्तों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। पिछवाई कला में आकृति केवल सजावटी तत्व नहीं है बल्कि प्रतीकात्मक अर्थ रखती है। कमल का फूल जिसे पिछवाई कला में प्रमुखता से दर्शाया जाता है, इसका हिन्दु धर्म में विशेष महत्व है, जो पवित्रता और दिव्य सुन्दरता का प्रतीक है। गाय का चित्रण पिछवाई कला में समृद्धि पोषण और सभी जीवंत रूपों की पवित्रता का प्रतिनिधित्व करती है, जो श्रीकृष्ण के देहाती जीवन का सार है। पिछवाई कला जिसमें मोरों को प्रमुखता से दर्शाया जाता है। हिन्दु पौराणिक कथाओं में मोरों का विशेष महत्व है। मोरों को चटक रंग एवं जटिल डिजाइनों में चित्रित किया जाता है। पिछवाई कला में इन विषयों और रूपांकनों का कलात्मक प्रतिनिधित्व स्थिर नहीं है, बल्कि समय के साथ विकसित होता है, जो कलाकारों की व्याख्या और प्रचलित संस्कृति को दर्शाता है। प्रस्तुत चित्र पिछवाई कला का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.15

पिछवाई कला की शैली लघु चित्रों से प्रेरित है परन्तु इसका पैमाना बहुत विस्तृत है। पिछवाई कला में गोंद और चाक के मिश्रण से तैयार कपास या रेशम के कैनवास का उपयोग किया जाता है फिर कलाकार तैयार कैनवास पर चारकोल या पेंसिल से डिजाइन बनाते हैं। इसके बाद रंगों को सावधानीपूर्वक भरा जाता है। इन चित्रों को बनाने के लिए हाथ से बुने सूती कपड़े पर प्राकृतिक रंगों, वनस्पति रंगों, खनिज रंगों और धातुओं जैसा सोना, चांदी के वास्तविक वर्क का उपयोग करके बनाये जाते हैं।

पिछवाई कला का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व बहुत गहरा और समृद्ध है। यह कला श्रीनाथ जी के मंदिर में भगवान कृष्ण की उपासना के लिए उत्पन्न हुई, इस कला में भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण होता है। यह धार्मिक चित्रण भक्तों को गहरे आध्यात्मिक अनुभव की अनुभूति कराता है। पिछवाई कला धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है और राजस्थान की समृद्ध विरासत का प्रतीक है।

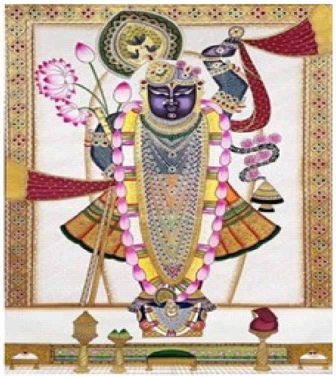

पिछवाई कला को सदियों से कई कलाकारों द्वारा संरक्षित और विकसित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक कलाकार ने इस पारंपरिक कला रूप में समकालीन विषयों व शैलियों को जोड़कर महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। पिछवाई कलाकार कल्याण जोशी अपनी जटिल बरीक कारीगरी और जीवंत रंग योजना के लिए जाने जाते हैं। कलाकार राजेन्द्र शर्मा, ललित शर्मा, विजय शर्मा, लक्ष्मण शर्मा, शहजाद अली शेरानी, रघुनंदन शर्मा, कल्याणमल साहू आदि कलाकारों ने अपनी विशिष्ट शैलियों और योगदानों के माध्यम से इन कलाकारों ने पिछवाई कला को संरक्षित और प्रचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पिछवाई कला जो पारंपरिक रूप से अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए जानी जाती है, समकालीन जीवन की मांगों और सौन्दर्य के अनुरूप परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। प्राचीन काल में पिछवाई पेंटिंग का उपयोग मंदिर में पृष्ठभूमि के रूप में किया जाता था, विशेषकर भगवान श्रीनाथ जी की पूजा में। आधुनिक युग में पिछवाई कलाकार अपने शिल्प का दैनिक जीवन की सजावट के विभिन्न पहलुओं में विविधता प्रदान कर रहे हैं। जैसे कपड़ा और फैशन पिछवाई कला ने फैशन उद्योग में अपनी जगह बना ली है। इसके जटिल डिजाइनों को साड़ियाँ, ब्लाउज, चूड़ियों आदि वस्तुओं के लिए भी अनुकूलित किया गया है।

शोध मंथन Vol. XVII No.1 Jan.- Mar. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *https://anubooks.com/journal-volume/shodhmanthan-vol-xvii-march-2026-no1*

**फैशन उद्योग में 'पिछवाई कला'**

घर की साज सज्जा और आंतरिक डिजाइन में भी पिछवाई पेंटिंग का उपयोग किया जा रहा है। जैसे बिस्तर की चादर, तकिये के कवर, दीवार भित्ति चित्र, कालीन में रूपांकनों का उपयोग किया जा रहा है। पिछवाई कला वास्तुशिल्प डिजाइनों को भी प्रभावित कर रही है, जिसमें टाइल्स, गेट अन्य संरचनात्मक तत्व में पिछवाई कला देखी जा सकती है। पिछवाई कला भक्ति इतिहास और कलात्मक कौशल का एक अनूठा संगम है, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है।

**घर की साज सज्जा प्लेस्ट में 'पिछवाई कला'**

पिछवाई कला राजस्थान की एक समृद्ध भक्ति–केन्द्रित कला है जो भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करते हुए न केवल धार्मिक अनुष्ठानों को समृद्ध किया है, बल्कि राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को भी सशक्त बनाया है। पिछवाई कला राजस्थान में नहीं बल्कि पूरे भारत में अपनी पहचान बना चुकी है। आधुनिक युग में पिछवाई कला को दुनिया भर के संग्रहालयों दीर्घाओं, मन्दिरों और निजी संग्रहों में देखा जा सकता है। प्राचीन काल में पिछवाई पेंटिंग का उपयोग मंदिरों की पृष्ठभूमि के रूप में किया जाता था, लेकिन आज पिछवाई कलाकार अपने शिल्प को विभिन्न पहलुओं में विविधता प्रदान कर रहे हैं। आधुनिक युग में पिछवाई कला का महत्व यह है कि यह न केवल भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को संरक्षण प्रदान कर रही है। बल्कि समकालीन कला और फैशन में भी अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। यह कला न केवल

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.15

भगवान श्रीकृष्ण के जीवन विभिन्न पहलुओं को चित्रित करती है बल्कि राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को भी सशक्त बनाती है।

संदर्भ


1. शर्मा, आर0 (2016), समकालीन भारतीय संस्कृति में पिछवाई कला का प्रभाव जर्नल ऑफ इंडियन आर्ट हिस्ट्री, पृ0सं0 234–245
2. भाटिया, एस0 और शर्मा आर0 (2020), राजस्थानी समाज में पिछवाई चित्रकला का सांस्कृतिक महत्व, पृ0सं0 391–410
3. प्रताप, डॉ0 रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृ0सं0 189–190
4. https://www.jetir.org
5. https://www.scribd.com
6. en-m-wikipedia-org